कूटनीति का समर : दक्षिण चीन सागर

डॉ0 डी0सी0 कटियार
एसोसिएट प्रोफेसर रक्षा एवं स्त्रातेजिक विभाग,
पी0पी0एन0 कालेज, कानपुर

डॉ0 वी0पी0 सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग,
एस0एस0बी0 (पी0जी0) कालेज, हापुड

शोध–सार

दक्षिण चीन सागर दुनिया के सबसे बड़े महासागरीय विवाद के रूप में माना जाता है। साथ ही दक्षिण चीन सागर का सामरिक महत्व भी काफी अधिक है, दक्षिण चीन सागर प्रशान्त महासागर और हिन्द महासागर के बीच स्थित बेहद अहम कारोबारी क्षेत्र है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस क्षेत्र में तेल, गैस, मत्स्य आदि आदि के प्रचुर मात्रा में भण्डार हैं जो बड़ी महाशक्तियों को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हाल ही में फिलीपींस द्वारा दक्षिण चीन सागर के एक विवादित क्षेत्र में संचित तेल भण्डार पर अपना दावा करने के उपरान्त यहॉ चीन और फिलीपीन्स के मध्य संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है। दक्षिण चीन सागर के ईद–गिर्द बसे देशों को देखें तो भारत को छोड़कर सभी छोटे–छोटे देश है, किन्तु इन राष्ट्रों को अमेरिका का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है। अतः अमेरिका इन राष्ट्रों के हितों के रक्षार्थ व इस क्षेत्र में संसाधनों की उपलब्धता को देखते हुए बराबर इस क्षेत्र पर निगाह गढ़ाये है, और यही द्वन्द्व इस क्षेत्र को 'समर' में परिवर्तित कर देता है।

मुख्य बिन्दु – समर, कूटनीति, क्वाड, दक्षिण चीन सागर।

चीन जिसे हम ड्रैगन के नाम से भी जानते हैं। हमेशा विवादों से घिरा रहने वाला चीन सम्प्रति विश्व की महान शक्तियों को आर्थिक, सामरिक और राजनीतिक धरातल पर हमेशा मात देते रहने की फिराक में रहता है। चाहे वन बेल्ट वन रोड हो या विवादित द्वीपों पर अपना कब्जा। इसी क्रम में चीन दक्षिण चीन सागर में समन्दर के अन्दर जमीन निकालकर वह आईलैंड री–क्लेम कर रहा है यानि आर्टिफिशियल आईलैंड बना रहा है। रीफ पर कब्जा कर रहा है और अब वहाँ अपने जहाज उतारने के लिए रन वे और हवाई पट्टी बना रहा है।

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग 2035 तक चीन की सेना को आधुनिक बनाने का आदेश दिया है उन्होंने चीन को विश्व स्तर की एक सैन्य शक्ति बनाने को कहा है। जो 2049 तक युद्धों को लड़ने और जीतने में सक्षम हो।

निश्चित ही चीन अपनी सेना को तेजी से मजबूत बना रहा है मिसाइल टैक्नोलॉजी, परमाणु हथियारों और आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स के क्षेत्र में इसकी पकड़। प्रगति ने पश्चिमी देशों के जानकारों के मन में गहरी चिंता बिठा दी है। जिसके चलते दुनियाँ की सैन्य शक्ति के संतुलन में तेजी से बदलाव हो रहा है।

आर्थिक प्रगति की ओर तेजी से अग्रसर चीन का दक्षिण चीन सागर में विशेष रुचि का कारण है प्रतिवर्ष अनुमानतः US $3.37 ट्रिलियन मूल्य का वैश्विक व्यापार, जो सम्पूर्ण विश्व के सामुद्रिक व्यापार का एक तिहाई है। चीन के ऊर्जा आयात का 80 प्रतिशत और कुल व्यापार का 39.5 प्रतिशत दक्षिण चीन सागर से ही होता है।

अब एक नजर दक्षिण चीन सागर की भौगोलिक/सामरिक स्थिति के बारे में भी जान लेते हैं। दक्षिण चीन सागर, दक्षिण–पूर्व एशिया में स्थिति पश्चिमी प्रशान्त महासागर का हिस्सा है यह चीन के दक्षिण और पूर्व में तथा वियतनाम के दक्षिण में फिलीपीन्स के पश्चिम में एवं वोर्नियों द्वीप के उत्तर में स्थित है।

यह पूर्वी चीन सागर से लूजॉन (Luzon) जल संधि से जुड़ा है। इसके सीमावर्ती देश चीन, ताइवान, फिलीपीन्स, मलेशिया, ब्रुनेई, इण्डोनेशिया, सिंगापुर और वियतनाम। सामरिक रूप से इस सागर का हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के बीच सम्पर्क लिंक होने के कारण अत्यधिक रणनीतिक महत्व है। इस सागर से होने वाला अरबों डालर का व्यापार इसे एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक जल निकाय बनाता है।

चीन वर्ष 2010 से बिना आबादी वाले इन द्वीपों को 'संयुक्त राष्ट्र समुद्री संधि' (UN Convention on the Law of the Sea UNCLOS) के तहत लाने के लिए इन द्वीपों के आकार और संरचना को कृत्रिम द्वीपों में कृत्रिम तरीके से परिवर्तित कर रहा है। साथ ही चीन ने पार्सल और सेपरेटली द्वीपों पर अपनी हवाई पट्टी भी बना ली है।

अमेरिका इन कृत्रिम द्वीपों के निर्माण की आलोचना करता है और इसे चीन द्वारा बनाई गई 'रेत की महान दीवार' की संज्ञा दी। दक्षिण चीन सागर को विवादित बनाने में इसके अनिश्चित भौगोलिक दायरा भी है। क्योंकि इसके चारों तरफ छोटे–छोटे देशों की उपस्थिति जो चीन से सीधे टक्कर नहीं ले सकते, ने चीन चौधराहट को बढ़ाया। इस क्षेत्र में आचार संहिता (Code of conduct) का कानूनी रूप से न होना भी विवाद का मुख्य कारण है।

भारत को इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को बढ़ाने हेतु नारा डेस के इर्द–गिर्द बसे देशों से अपने सम्बन्ध सुधारने होंगे। इस कार्य हेतु भारत इन देशों को हथियार/टेक्नोलॉजी व अन्य वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देना होगा। इन राष्ट्रों के पास तकनीक की कमी के कारण पेट्रोल, गैस, मछली पकड़ने हेतु अपने संसाधनों को मुहैया कराना होगा। अमेरिका व भारत इस क्षेत्र में बसे देशों में अपने सैनिक अड्डे स्थापित कर इन राष्ट्रों को सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं। तभी चीन का प्रभाव दक्षिण चीन सागर से कम किया जा सकता।

दक्षिण चीन सागर का विवादित इतिहास काफी पुराना है। सर्वप्रथम 1947 में मूल रूप से चीन गणराज्य की कुओमितांग सरकार ने 'इलेवन डैश लाइन' के माध्यम से इस क्षेत्र पर अपना दावा प्रस्तुत किया था।

सन् 1949 में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का गठन हुआ तत्पश्चात चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा टोंकिन की खाड़ी को इलेवन डैश लाइन से बाहर कर दिया परिणामस्वरूप इलेवन डैश लाइन को अब नाइन डैश लाइन (दक्षिण चीन सागर पर चीन द्वारा खींची गई 9 आभासी रेखाएं) के नाम से जाना जाने लगा। तभी (1949) से चीन नाइन डैश लाइन के माध्यम से दक्षिण चीन सागर के अधिकांश भाग (लगभग 80 प्रतिशत) पर अपने अधिकार का दावा करता है। दक्षिण चीन सागर विवाद के मुख्य कारण इस समुद्र पर विभिन्न देशों का दावा और क्षेत्रीय सीमांकन है।

चीन दक्षिण चीन सागर के 80 प्रतिशत हिस्से को अपना मानता है। एक रिपोर्ट के अनुसार इस क्षेत्र में करीब 11 अरग बैरल तेल, 266 ट्रिलियन क्यूबिक फीट प्राकृतिक गैस के भण्डार हैं, जो चीन को लगभग 60 वर्षों तक उसकी माँग को पूरा कर सकता है। साथ ही इस क्षेत्र से प्रत्येक वर्ष लगभग 5 ट्रिलियन डालर मूल्य का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है। यहाँ यह भी बताना समीचीन होगा कि सिर्फ इस क्षेत्र में तेल एवं गैस हीन ही दक्षिण चीन सागर में मछलियों की हजारों नस्लें पाई जाती हैं। इसलिये यह क्षेत्र मत्स्य संसाधनों से परिपूर्ण है, जो दक्षिण एशिया में लाखों लोगों की खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

चीन का लगभग 80 प्रतिशत ऊर्जा आयाग और चीन का कुल व्यापार का लगभग 39.5 प्रतिशत दक्षिण चीन सागर से होकर गुजरता है क्योंकि चीन को प्राकृतिक तेल की

आपूर्ति मध्य–पूर्व से होती है और यह मलस्का जलडमरूमध्य के रास्ते से होकर गुजरता है। अक्सर अमेरिका चीन को चेतावनी देता है कि वह मलस्का जलडमरूमध्य को ब्लाक कर देगा जिससे चीन की ऊर्जा आपूर्ति रुक जायेगी। इसलिए चीन दुनियॉभर के अन्य देशों में अपनी ऊर्जा सुरक्षा को लेकर सजग और आक्रामक हुआ है। यही कारण है कि चीन को दक्षिण चीन सागर में अपने भू–आर्थिक और भू–सामरिक हित दिखाई देते हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि चीन ने वर्ष 2016 में दक्षिण चीन सागर पर मालिकाना हक के एक अन्तर्राष्ट्रीय मध्यस्थता न्यायालय के निर्णय को मानने से इन्कार कर दिया था। हेग स्थित परमानेन्ट कोर्ट ऑफ आर्विट्रेशन ने फैसले में कहा था कि चीन अवैधानिक तरीके से दक्षिण चीन सागर में फिलीपीन्स के जायज अधिकारों का उल्लंघन कर रहा है। चीन ने इस फैसले को सिरे खारिज कर दिया था।

भारत दक्षिण चीन सागर में स्वतंत्र व निर्बाध जल परिवहन हेतु सभी पक्षों से 'यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑफ द लॉ ऑफ द सी, 1982' के सिद्धान्तों को अपनाने का समर्थन करता है।

2016 में भारत के विदेश मंत्रालय ने अपना पक्ष आधिकारिक रूप से रखा था कि जिसे दक्षिण चीन सागर कह रहा है, वह फिलीपीन्स सागर है।

दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ रही दखलंदाजी से अमेरिका सबसे ज्यादा चिंतित है। इसीलिए चीन के प्रभुत्व से निपटने हेतजु अमेरिका स्पष्ट रूप से मध्य पूर्व में अपने पद चिन्ह को कम करने और एशिया में अपनी उपस्थिति बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। चीन की बढ़ती मुखरता को रोकने के लिए ही अमेरिका ने अपनी 'एशिया नीति' के तहत क्वाड को लांच किया है। भारत, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और जापान क्वाड के सदस्य हैं जिनकी पूर्वी एशिया में समान चिंताएं और साझा हित है।

भारत के लिए क्वाड का महत्व इस दृष्टि से भी अधिक है कि चीन, पाक के साथ सीमा विवादों को देखते हुए। हिंद महासागर में क्वाड देशों के साथ मिलकर एक ऐसी व्यवस्था करना है, जिसके रहते हुए चीन हिन्द महासागर में किसी भी कीमत पर अपना पैर आगे नहीं बढ़ा सके। दरअसल वैश्विक व्यापार के लिहाज से हिन्दी महासागर का समुद्री मार्ग चीन के लिये काफी ज्यादा महत्वपूर्ण है। इधर श्रीलंका के हवन टोटा बंदरगाह पर कब्जा करने के बाद चीन की महत्वाकांक्षा हिन्द महासागर में काफी बढ़ चुकी है, लिहाजा क्वाड की मदद से भारत चीन को काफी आसानी से हिंद महासागर से दूर रख सकता है। वहीं फ्रांस और जर्मनी भी हिंद–प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक रूप में आगे बढ़ रहे हैं, इस आधार पर सभी देश मिलकर चीन को आसानी से रोक सकते हैं।

चीन क्वाड को नाटो जैसा सैन्य गठबंधन मानता है, लेकिन क्वाड असल में सैन्य गठबन्धन से कहीं आगे है भविष्य में ये गठबन्धन चीन की अर्थव्यवस्था पर सीधी चोट करेगा। इसके साथ ही आस्ट्रेलिया और चीन के सम्बन्ध काफी खराब हो चुके हैं, अमेरिका भी चीन को लेकर काफी आक्रामक हैं, जबकि जापान और चीन विगत महीनों में कई बार आमने–सामने आ चुके हैं। अमेरिका क्वाड को सिर्फ रक्षा क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रखना चाहता है।

ब्रिक्स (BRICS) की स्थापना भी कूटनीतिक लिहाज से ही हुई थी, इसमें चीन को सदस्य भारत ने ही बनवाया ताकि अमेरिका के विरोध को नियंत्रित किया जा सके और विश्व में कई ध्रुवों का निर्माण हो सके। कई विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिका को समझ में आने लगा कि एशिया में पाकिस्तान को सहयोग करके अपने मूल प्रतिद्वंदी चीन को नहीं रोक पायेगा। यही कूटनीतिक चाल ने अमेरिका को भारत के नजदीक लाकर खडा कर दिया और चीन–भारत सम्बन्धों में फिर तनाव आने शुरू हो गये।

निष्कर्ष –

- दक्षिण चीन सागर विवाद ने इस क्षेत्र के इर्द–गिर्द बसे छोटे–छोटे देशों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया।

- यदि इस क्षेत्र में तनाव इसी प्रकार जारी रहा तो शिपिंग और आर्थिक गतिविधियाँ बाधित होंगी जिसका प्रभाव भारत की आर्थिक/सामरिक व्यवस्था पर भी पड़ सकता है।
- पूर्वी एशिया में अमेरिका की व्यापक सुरक्षा प्रतिबद्धताएं हैं। अमेरिका ने इस क्षेत्र के कई देशों जैसे फिलीपीन्स, सिंगापुर और वियतनाम के साथ सुरक्षा गठबंधन भी कर रखा है। इसलिए इन देशों का चीन के साथ कोई विवाद अमेरिका को सीधे प्रभावित करेगा।
- भारत, पूर्वी एशिया विशेष रूप से चीन के साथ विवाद में उलझे हुए देशों के साथ सैन्य साजोसामान आयात–निर्यात बढ़ाने के साथ ही महत्वपूर्ण सैन्य साझीदार के रूप में उभर सकता है। दक्षिण चीन सागर विवाद को भारत के लिए पूर्वी एशियाई पड़ोसियों के साथ रिश्ते सुधारने के महत्वपूर्ण मौके के रूप में लेना चाहिए। इससे भारत को इस क्षेत्र में जो अपना कद बढ़ाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है उसे जाने नहीं देना चाहिए। भारत को अत्यधिक कूटनीतिक दृष्टि से विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। मुझे पूर्ण आशा है कि भारत इस क्षेत्र में स्वयं को एक वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर सकता है।

सन्दर्भ सूची –

1. सिंह, अशोक कुमार (2019) राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम द्वितीय संस्करण।
2. सिंह, वी0पी0 (2017) राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा प्रथम संस्करण।
3. सिंह, अशोक कुमार (2018) रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन, तृतीय संस्करण।
4. ध्येय आई0ए0एस0, डेली करेंट अफेयर्स।
5. दृष्टि द विजन, दक्षिण चीन सागर विवाद, 11 फरवरी, 2021 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।
6. इण्डियन एक्सप्रेस डेली न्यूज, 3 जनवरी, 2022
7. नवभारत टाइम्स, 6 सितम्बर, 2021